Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
April 2024 5(4), 2284–2287

ANALYTICAL STUDY OF AWARENESS OF SC/ST STUDENTS IN THE CONTEXT OF NEW NATIONAL EDUCATION POLICY-2020

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों की जागरूकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Hemlata Jaimini [1] ✉, Dr. Poonam Mishra [2]

[1] Research Scholar, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India
[2] Professor, Department of Education, Apex University, Jaipur, Rajasthan, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i4.2024.6189

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: The objective of this study is to study the awareness of Scheduled Caste and Scheduled Tribe students towards National Education Policy 2020 in the context of the faculty. Survey method was used in this study. A total of 612 graduate level students of Dausa district have been selected for the sample. Data were collected through self-made instrument and mean, standard deviation and CR test statistics were used for analysis. After analysis, it was found in the result that there is no significant difference in the awareness of National Education Policy 2020 of Scheduled Caste and Scheduled Tribe students of Arts, Science and Commerce Faculty of graduation level studying in government and private colleges.

Hindi: इस अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता का अध्ययन संकाय के संदर्भ में करना है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्ष के लिए दौसा जिले के स्नातक स्तर के कुल 612 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। स्वनिर्मित उपकरण के माध्यम से प्रदत्तों का संकलन किया एवं विष्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं सीआर परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। विष्लेषण के उपरांत परिणाम में यह पाया कि राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के कला, विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

Keywords: Scheduled Caste and Tribe, National Education Policy 2020, Awareness, अनुसूचित जाति एवं जनजाति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, जागरूकता

1. प्रस्तावना

भारत वर्ष सांस्कृतिक, भौगोलिक एवं भाषा की विभिन्न लिये हुए सभी धर्मो को मानने वाला एक प्रतिभा सम्पन्न राष्ट्र है, जिसमें समाजवाद एक ऐसी विधा है, जिसके द्वारा भारत की एकता एवं अखण्डता बनाये रखने का प्रयास किया जा रहा है। एक लोकतांत्रिक देश में स्वतंत्रता एवं समानता पर आधारित समाज के सभी वर्गो का विकास करना आवश्यक होता है। इसी दृष्टि से समाज के उन कमजोर एवं शोषित वर्ग (अनुसूचित जनजाति) के उत्थान एवं सर्वांगीण विकास हेतु प्रयास किया जाना आवश्यक है। हमारे संविधान में इन वर्गों के विकास एवं कल्याण के लिए अनेक प्रकार की योजनाओं का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया गया है लेकिन आज भी सभी लोगों तक या सभी शोषित वर्ग तक यह योजनायें पहुंच नहीं पायी है या कहिए कि उनका सम्पूर्ण विकास नहीं कर पायी है। देश के समग्र विकास के लिए आवश्यक है कि इन वंचित लोगों को भी मुख्य धारा से जोड़ा जाय।

इन्हें मुख्य धारा से जोड़ने या इन्हें विकसित करने के लिए आवश्यक है कि इन्हें आज की विकसित व्यवस्था एवं विकसित समाज से जोड़ा जाय। बिना इन्हें मुख्य धारा से जोड़े इनका विकास सम्भव नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि इनको एवं इनके दुर्गम निवास स्थानों को आज के विकसित

संसाधनों के द्वारा जोड़ दिया जाय, उनके क्षेत्रों का विकास किया जाय, एवं उनके समाज में व्याप्त रूढ़ियों को धीरे-धीरे समाप्त किया जाय। रूढ़ियों को समाप्त करके इन्हें देश एवं समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जाय।

बिना शैक्षिक विकास के समाज, संस्कृति एवं राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं है। किसी भी राष्ट्र को विश्वपटल पर अपने को स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि राष्ट्र का तेज गति से बदलती हुई परिस्थितियों में सर्वोत्तम विकास हो। राष्ट्र का विकास तभी सम्भव है जब राष्ट्र की सम्पूर्ण जनसंख्या का उपयोग एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिये किया जाय। इसके लिए आवश्यक है कि हम समाज के उन वर्गो को भी साथ लेकर चलें जो लोग समाज की मुख्य धारा से कटे हुए है या शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए है। बिना उनके विकास के राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं है। राष्ट्र एवं समाज का सर्वांगीण विकास समाज के सभी वर्गों की साक्षरता एवं शैक्षिक उपादेयता, उपलब्धियों के आधार पर ही सम्भव हो सकता है। राष्ट्र को विकासशील से विकसित राष्ट्र के रूप में सम्मिलित करने के लिए आवश्यक है कि राष्ट्र का सर्वांगीण, शैक्षिक, आर्थिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक विकास किया जाय। हमारे देश ने नियोजन की पंचवर्षिय योजनाओं मे अनुसूचित जाति-जनजाति के लिए कुछ सुविधाएं प्रदान की फिर भी शैक्षिक पिछडेपन में सुधार नही आया। उनके विकास की ओर समुचा ध्यान देने के बाद भी उन्नती न हो पाई है। इन पिछडेवर्ग के लोगों मे आत्मविश्वास, स्वयनिर्णय, कटूता, भावनिक विकास, भावनाओ में सामंजस्यता आदि का विकास होना आवश्यक है।

2. संबंधित साहित्य का अध्ययन

1) **सिंह, बिरेंद्र (2022)** - उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि। यह शोध पत्र नई शिक्षा नीति 2020 के लिए संदर्भित है, जो मुख्यतः शिक्षा नीति 2020 की मुख्य विशेषताओं का वर्णन करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारत-केंद्रित शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की गई है, जो इसकी परंपरा, संस्कृति, मूल्यों और लोकाचार में परिवर्तन लाने में अपना बहु मूल्य योगदान देने को तत्पर है। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य बिना किसी भेद भाव के प्रत्येक व्यक्ति को बढ़ने और विकसित होने के लिए एक सामान अवसर प्रदान करना है तथा विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल, बुद्धि और आत्मविश्वास का सर्जन कर उनके दृष्टिकोणों का विकास करना है।
2) **दुबे, आशुतोष (2021)** ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और विद्यालयीय शिक्षा के आलोक में समाज कार्य की उपादेयता नामक अपने आलेख से यह बताया कि वण्य विषय के दो प्रमुख अवयव हैं- प्रथम 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' और विद्यालयीय शिक्षा तथा द्वितीय उसके क्रियान्वयन की दृष्टि से समाजकार्य की विधि की उपादेयता'। अतः समाजकार्य और प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकत्र्ता के अभिप्राय तथा एनईपी-2020 में निहित विद्यालयीय शिक्षा के प्रभावी प्रावधानों को स्पष्ट किया जाना आवश्यक है जिससे विषयानु सार समाजकार्य के सिद्धान्तों और विधियों.प्रविधियों की उपायोगिता को स्पष्ट किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का उद्देश्य भी सभी बच्चों को विद्यालयीय शिक्षा उपलब्ध कराने के साथ ही उनमें शिक्षा की बुभुक्षा उत्पन्न करना तथा रचनात्मकता का विकास करना है सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों को चिह्नित कर वहाँ की बालिकाओं, अनु सूचितजाति, जनजाति, पिछड़ावर्ग और अल्पसंख्यक समुदाय के साथ ही दिव्यांग और ट्रान्सजेण्डर (क्लीब) को शिक्षित करने पर विशेष बल दिया जाना राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 की एक अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

3. शोध उद्देश्य

1) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के कला संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विज्ञान संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के वाणिज्य संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध परिकल्पना

1) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के कला संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
2) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विज्ञान संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।
3) राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के वाणिज्य संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दौसा जिले के स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में माना गया है।

न्यादर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में दौसा जिले के स्नातक स्तर के कुल 612 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मानक उपकरण के अभाव में स्वनिर्मित जागरूकता मापनीं का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों का विष्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं सीआर परीक्षण सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण

परिकल्पना 1 - राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के कला संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 1

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सीआर-मान	परिणाम
राजकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थी	102	214.67	19.16	1.63	स्वीकृत
निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी	102	218.99	18.77		

व्याख्या एवं विश्लेषण

तालिका से यह स्पष्ट है कि राजकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 214.67 एवं मानक विचलन 19.16 है। निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 218.99 एवं मानक विचलन 18.77 है। मध्यमान एवं मानक विचलन की सहायता से क्रांतिक अनुपात (सीआर) की गणना करने पर मान 1.63 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर के आवश्यक मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना 2 - राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विज्ञान संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 2

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सीआर-मान	परिणाम
राजकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थी	102	210.17	17.94	0.79	स्वीकृत
निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी	102	212.06	16.22		

व्याख्या एवं विश्लेषण

तालिका से यह स्पष्ट है कि राजकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 210.17 एवं मानक विचलन 17.94 है। निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 212.06 एवं मानक विचलन 16.22 है। मध्यमान एवं मानक विचलन की सहायता से क्रांतिक अनुपात (सीआर) की गणना करने पर मान 0.79 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर के आवश्यक मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना 3 - राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के वाणिज्य संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

तालिका संख्या 3

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	सीआर-मान	परिणाम
राजकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थी	102	212.32	15.46	0.32	स्वीकृत
निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थी	102	211.61	16.34		

व्याख्या एवं विश्लेषण

तालिका से यह स्पष्ट है कि राजकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 212.32 एवं मानक विचलन 15.46 है। निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान 211.61 एवं मानक विचलन 16.34 है। मध्यमान एवं मानक विचलन की सहायता से क्रांतिक अनुपात (सीआर) की गणना करने पर मान 0.32 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर के आवश्यक मान से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।।

5. निष्कर्ष

- राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के कला संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
- राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विज्ञान संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।
- राजकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के वाणिज्य संकाय के अनुसूचित जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं है।

संदर्भ सूची

कपिल, एच. के.(1995). अनुसंधान विधियाँ. मेरठः भार्गव भवन ।
मंगल एस के (1987). शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी. जालंधरः प्रकाश ब्रदर्स ।
पाठक, पी डी. (2012). शिक्षा मनोविज्ञान. आगराः विनोद पुस्तक मंदिर।
पाठक, आर.पी. व भारद्वाज, अमिता पाण्डेय. (2012). शिक्षा में अनुसंधान एवं सांख्यिकी, नई दिल्ली: कनिष्क पब्लिशर्स।
सक्सेना, पराग (2017). नई शिक्षा पद्धति. नई दिल्लीः अग्रवाल पब्लिकेशन ।
सिंह, अरूण कुमार (2004). मनोविज्ञान, समाजषास्त्र तथा शिक्षा मेंषोध विधियां. नई दिल्लीः एम.एल.बी.डी. प्रकाशन।
शर्मा, आर. (2019). शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया. मेरठ: अनु बुक्स, आर. लाल बुक डिपो।
शर्मा, आर. ए. (2006). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ: सूर्या पब्लिकेशन ।